इकाई 14 आदर्श प्ररूप

इकाई की रूपरेखा

14.0 उद्देश्य

14.1 प्रस्तावना

14.2 आदर्श प्ररूपः व्याख्या, संरचना और विशेषताएं

- 14.2.1 व्याख्या
- 14.2.2 संरचना
- 14.2.3 विशेषताएं

14.3 आदर्श प्ररूप के उद्देश्य और उपयोग

14.4 वेबर द्वारा निर्धारित आदर्श प्ररूप

- 14.4.1 विशिष्ट ऐतिहासिक तत्वों के आदर्श प्ररूप
- 14.4.2 सामाजिक यथार्थ के अमूर्त तत्व
- 14.4.3 व्यवहार विशेष की पुनर्रचना

14.5 सारांश

14.6 शब्दावली

14.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

14.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

14.0 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आपके लिए संभव होगा

- आदर्श प्ररूपों के अर्थ और विशेषताओं की चर्चा करना
- सामाजिक विज्ञानों के आदर्श प्ररूपों के उद्देश्य और उपयोग की विवेचना करना
- मैक्स वेबर ने अपनी रचनाओं में आदर्श प्ररूप का उपयोग कैसे किया है, इसकी व्याख्या करना।

14.1 प्रस्तावना

इस पाठ्यक्रम के पहले खंड में आपने समाजशास्त्र के संस्थापक विद्वानों के प्रमुख धारणाओं के विषय में जाना। दूसरे और तीसरे खंड में कार्ल मार्क्स (1818-1883) और एमिल दर्खाइम (1858-1917) के समाजशास्त्रीय विचारों के बारे में बताया गया। इस खंड में हमने समाजशास्त्र में मैक्स वेबर (1864-1920) के प्रमुख योगदान की चर्चा की है।

मैक्स वेबर के सिद्धांतों के बारे में यह इस खंड की पहली इकाई है। सामाजिक विज्ञानों की विचार पद्धति को समझने के लिए मैक्स वेबर ने आदर्श प्ररूप की अवधारणा प्रस्तुत की। इस इकाई में मैक्स वेबर के प्रमुख सिद्धांतों को उचित परिप्रेक्ष्य और पृष्ठभूमि को समझने तथा परखने हेतु आदर्श प्ररूप की अवधारणा को समझने का प्रयास किया गया है।

इस इकाई में सबसे पहले आदर्श प्ररूपों का सामान्य अर्थ स्पष्ट किया गया है। मैक्स वेबर के सिद्धांतों के अनुसार आदर्श प्ररूप की समाजशास्त्रीय अवधारणा और विशेषताओं की व्याख्या की गई है। यहां इन दो प्रश्नों का भी उत्तर दिया गया है कि समाजशास्त्रियों को आदर्श प्ररूप विकसित करने की ज़रूरत क्यों पड़ती है और ऐसे प्ररूप कैसे तैयार किए जाते हैं। वेबर ने तीन विशिष्ट तरीक़ों से आदर्श प्ररूपों का उपयोग किया। तीनों संदर्भों में आदर्श प्ररूपों के उपयोग की चर्चा की गई है। ये संदर्भ हैं

(क) विशिष्ट ऐतिहासिक तत्वों के आदर्श प्ररूप

(ख) सामाजिक यथार्थ के अमूर्त तत्वों के आदर्श प्ररूप और

(ग) किसी विशिष्ट व्यवहार की पुनर्रचना के आदर्श प्ररूप।

उचित उदाहरणों के साथ इन तीन तरह के प्ररूपों की विवेचना की जा रही है।

14.2 आदर्श प्ररूपः व्याख्या, सरंचना और विशेषताएं

मैक्स वेबर के अनुसार 'आदर्श प्ररूप' शब्द का अपना विशिष्ट अर्थ है और इसकी संरचना में कुछ बुनियादी सिद्धांत हैं। इस भाग में 'आदर्श प्ररूप' शब्द सामान्य तथा वेबर द्वारा बताया गया अर्थ, इसकी संरचना और विशेषताओं के बारे में बताया गया है।

14.2.1 व्याख्या

सबसे पहले आइए हम 'आदर्श' और 'प्ररूप' शब्दों के शब्दकोषीय अर्थ की चर्चा करें। न्यू वेबस्टर डिक्शनरी के अनुसार 'आइडियल' (जिसका हिन्दी पर्याय 'आदर्श' है) का अर्थ "अधिक से अधिक पूर्णता की स्थिति वाला मानक स्वरूप या धारण है।" इसकी चर्चा किसी मानसिक छवि या धारणा के रूप में होती है, किसी भौतिक पदार्थ के रूप में नहीं। कॉलिंस कॉबिल्ड इंगलिश लैंगएज डिक्शनरी के अनुसार, "किसी संदर्भ में आपका आदर्श व व्यक्ति या वस्तु होगी जो आपको उस संदर्भ में सर्वोत्तम उदाहरण लगे।"

'टाइप' (जिसका हिन्दी पर्याय 'प्ररूप' है) का अर्थ है "कोई प्रकार, वर्ग अथवा समूह जिसे अपनी ख़ास विशेषता के कारण अन्य वर्गों से अलग रखा जा सके" (*न्यू वेबस्टर डिक्शनरी, 1985*)। इस तरह, आमतौर से आदर्श प्ररूप किन्हीं वस्तुओं या व्यक्तियों के ऐसे प्रकार, वर्ग अथवा समूह को कहा जा सकता है जिसकी अपनी ख़ास विशेषता अथवा लक्षण हो और वह विशेषता अपने वर्ग या समूह में सर्वोत्तम लगे।

वेबर ने 'आदर्श प्ररूप' का इस्तेमाल एक विशिष्ट अर्थ में किया। उसके अनुसार 'आदर्श प्ररूप' एक मॉडल की तरह, दिमाग़ी तौर पर बनाई गई ऐसी विधि है जिसके आधार पर वास्तविक स्थिति अथवा घटना को परखा जा सकता है और उसका क्रमबद्ध तरीक़े से चित्रण किया जा सकता है। वेबर ने सामाजिक यथार्थ को समझने और परखने के लिए आदर्श प्ररूप को विचार पद्धति के साधन के रूप में प्रयुक्त किया।

विचार पद्धति अवधारणाओं और तर्कों पर आधारित शोध विधि का ऐसा तरीक़ा है जिससे ज्ञान विकसित होता है। ऐतिहासिक दृष्टि से देखा जाए तो सामाजिक विज्ञानों की विचार पद्धति में ज़्यादातर ज़ोर इनकी वैज्ञानिक प्रमाणिकता निर्धारित करने पर दिया गया है (मिचेल 1968: 118)। मैक्स वेबर की सामाजिक विज्ञानों में वस्तुपरकता के प्रति विशेष रूचि थी। इसलिए उसने आदर्श प्ररूप को विचार पद्धति के ऐसे साधन के तौर पर प्रयोग किया जो यथार्थ को वस्तुपरक दृष्टि से देखें। यह सामाजिक यथार्थ को किसी व्यक्तिपरक पूर्वाग्रह के बिना परखता है तथा वर्गीकृत, क्रमबद्ध और परिभाषित करता है।

आदर्श प्ररूप का मूल्यों से कुछ संबंध नहीं है। शोध के साधन के रूप में आदर्श प्ररूप का प्रयोग वर्गीकरण और तुलना के लिए होता है। मैक्स वेबर (1971:63) के अनुसार, आदर्श प्ररूप की अवधारणा शोध कार्य में संभावित कारणों की खोज में हमारी मदद करती है। यह यथार्थ का विवरण नहीं है लेकिन इसका उद्देश्य ऐसे विवरण की स्पष्ट अभिव्यक्ति देना है जिन तथ्यों को आनुभाविक शोध के लिए सतर्कता से और जांच-परखकर एकत्र किया गया है। इस दृष्टि से, आदर्श प्ररूप ऐसी अवधारणाएं अथवा संरचनाएं हैं, जिनका किसी सामाजिक समस्या को समझने और विश्लेषित करने की विचार पद्धति में साधन के रूप में प्रयोग किया जाता है।

यह समझने के लिए कि मैक्स वेबर ने आदर्श प्ररूपों का कैसे उपयोग किया, आइए देखें कि इन प्ररूपों की रचना कैसे होती है।

14.2.2 संरचना

आदर्श प्ररूप अनिश्चित संख्या में ऐसे तत्वों के अमूर्तीकरण और संयोग से विकसित किए जाते हैं, जो तत्व यथार्थ में पाए तो जाते हैं लेकिन अपने विशिष्ट रूप में या तो कभी नहीं पाए जाते या बहुत ही कम पाए जाते हैं। इसलिए, वेबर ने यह नहीं माना कि उसने कोई नई अवधारणा पर आधारित पद्धति प्रस्तुत की। वेबर ने इस बात पर ज़ोर दिया कि व्यवहार में जो पहले से किया जा रहा है, वह उसी को अधिक स्पष्ट कर रहा है। आदर्श प्ररूप तैयार करने के लिए समाजशास्त्री पूरे ढांचे से कुछ विशेषताओं को चुनता है, क्योंकि संपूर्ण ढांचा अस्पष्ट और भ्रमित करने वाला होता है। उदाहरण के लिए, यदि हम भारत में लोकतंत्र (अथवा धर्मनिरपेक्षता, साम्प्रदायिकता, समानता) का अध्ययन करना चाहें तो सबसे पहले हमें लोकतंत्र की अवधारणा को इसकी अनिवार्य तथा प्रारूपिक विशेषताओं के आधार पर परिभाषित करना होगा। यहां लोकतंत्र की कुछ अनिवार्य विशेषताओं का उल्लेख करना उचित होगा, जैसे कि बहुदलीय प्रणाली, सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार, जन समुदाय के प्रतिनिधियों द्वारा सरकार का गठन, निर्णयों में जनसमुदाय की भागीदारी, समानता का अधिकार, बहुमत का सम्मान। लोकतंत्र का शुद्ध या आदर्श प्ररूप तैयार होने के बाद यह प्ररूप हमारे विश्लेषण की दिशा निर्धारित करेगा और विश्लेषण का साधन बनेगा। भारत के लोकतंत्र की विशेषताओं का इस प्ररूप के अनुरूप अथवा प्रतिकूल होना ही यथार्थ का सही चित्र हमार सामने रखेगा (उदाहरणार्थ देखें चित्र 14.1: न्यायालय का आदर्श प्ररूप)। इस प्रकार, आदर्श प्ररूप से सामान्य अथवा औसत विशेषताएं नहीं, बल्कि प्रारूपिक और अनिवार्य विशेषताएं प्रकट होती हैं। उदाहरण के लिए, अपनी पुस्तक *द* **प्रोटेस्टेंट एथिक** *एंड स्पिरिट ऑफ़ कैपिटलिज़्म* में वेबर ने कल्विन धर्म की विशेषताओं का विश्लेषण किया है। ये विशेषताएं विभिन्न ऐतिहासिक लेखों से ली गई हैं। इनमें कल्विन सिद्धांतों के ऐसे हिस्से शामिल हैं जो वेबर के अनुसार पूंजीवादी प्रवृत्ति विकसित करने की दृष्टि से विशेष महत्व के रहे हैं। इस तरह, आदर्श प्ररूप कुछ ऐसे तत्वों, गुणों अथवा विशेषताओं का चयन है जो संबंधित अध्ययन के लिए विशेष रूप से प्रासंगिक होते हैं। लेकिन एक बात ध्यान में रखनी चाहिए कि आदर्श प्ररूप यथार्थ तथ्यों से विकसित तो किए जाते हैं, परन्तु ये पूर्ण यर्थाथ का प्रतिनिधित्व नहीं करते अथवा उनका विवरण प्रस्तुत नहीं करते। तार्किक आधार पर ही ये शुद्ध प्ररूप होते हैं। वेबर के अनुसार ऐसी आदर्श मानसिक संरचना, अपने अवधारणात्मक शुद्ध स्वरूप में, यथार्थ में व्यावहारिक रूप से कहीं भी नहीं मिल सकती। आदर्श प्ररूप विकसित करने का यही तरीक़ा है। इसे और अच्छी तरह समझने के लिए, इसी इकाई के भाग 14.4 में वेबर द्वारा उपयोग में लाई गई आदर्श प्ररूप की अवधारणाओं की विवेचना की गई है।

चित्र 14.1: न्यायालय का आदर्श प्ररूप

14.2.3 विशेषताएं

उपरोक्त चर्चा के आधार पर आदर्श प्ररूपों की निम्न विशेषताएं बताई जा सकती हैं।

i) आदर्श प्ररूप सामान्य अथवा औसत प्ररूप नहीं है। इसका अर्थ है कि ये विचारधीन समूह, वस्तु अथवा घटना की सभी सामान्य विशेषताओं के रूप में परिभाषित नहीं किए जाते। ये कुछ ऐसे विशिष्ट गुणों पर आधारित हैं जो आदर्श प्ररूप की अवधारणा विकसित करने के लिए अनिवार्य हैं।

ii) ये पूर्ण यथार्थ की प्रस्तुति नहीं हैं, न ही ये सभी बातों की व्याख्या करते हैं। ये पूर्ण यथार्थ की आंशिक अवधारणा को ही व्यक्त करते हैं।

iii) आदर्श प्ररूप यथार्थ की किसी निश्चित अवधारणा की व्याख्या नहीं करते, ये यथार्थ की कोई परिकल्पना भी नहीं प्रस्तुत करते, लेकिन यथार्थ की व्याख्या और विवरण में सहायक होते हैं। आदर्श प्ररूपों का क्षेत्र और उपयोग वर्णनात्मक अवधारणाओं से भिन्न है। उदाहरण के लिए, यदि विभिन्न सम्प्रदायों के वर्गीकरण में वर्णनात्मक अवधारणा का प्रयोग किया जाए और फिर आर्थिक गतिविधि के लिए इनकी अलग-अलग विशेषताओं के महत्व को निर्धारित करना हो तो संप्रदाय की धारणा का फिर निर्धारण करना होगा ताकि संप्रदायों के ऐसे विशिष्ट गुणों पर ध्यान दिया जा सके जो आर्थिक कार्यकलापों को प्रभावित करते हैं। इस प्रकार, यह धारणा आदर्श विशिष्ट बन जाती है। इसका अर्थ है कि जब किसी वस्तु अथवा घटना के वर्णन की बजाय उसकी व्याख्या या विश्लेषण करना हो तो कुछ तत्वों का अमूर्तीकरण और पुनर्निर्धारण करके किसी भी वर्णनात्मक धारणा को आदर्श विशिष्ट धारणा में बदला जा सकता है।

iv) इस दृष्टि से यह भी कहा जा सकता है कि आदर्श प्ररूप घटनाक्रम के कार्यकारण विश्लेषण से जुड़े हैं, लेकिन ये पूर्व-निर्धारित व्याख्या के अर्थ में नहीं जुड़े हैं।

v) सामान्य निष्कर्षों तक पहुँचने और तुलनात्मक विश्लेषण में भी ये सहायक हैं।

vi) आदर्श प्ररूप आनुभाविक शोध के निर्देशन में भी सहायक होते हैं। ये ऐतिहासिक और सामाजिक यथार्थ के आंकड़ों को क्रमबद्ध करने में भी उपयोगी होते हैं।

बोध प्रश्न 1

i) निम्नलिखित कथनों में सही कथन पर निशान लगाइए।

क) आदर्श प्ररूप सामान्य प्ररूप हैं।

ख) आदर्श प्ररूप औसत प्ररूप हैं।

ग) आदर्श प्ररूप शुद्ध प्ररूप हैं।

घ) आदर्श प्ररूप आदर्शात्मक प्ररूप हैं।

ii) नीचे दिए गए तथ्यों में से प्रत्येक के सामने बने कोष्ठक में "सही" अथवा "ग़लत" पर निशान लगाइए।

क) आदर्श प्ररूप यथार्थ का विवरण है सही/ग़लत

ख) आदर्श प्ररूप किसी सामाजिक स्थिति अथवा घटना के विश्लेषण और व्याख्या में सहायक हैं। सही/ग़लत

ग) आदर्श प्ररूप विशिष्ट और अनिवार्य गुणों के चयन द्वारा विकसित किए जाते हैं। सही/ग़लत

घ) आदर्श प्ररूप परिकल्पना हैं। सही/ग़लत

च) आदर्श प्ररूप पूर्ण यथार्थ का प्रतिनिधित्व करते हैं। सही/ग़लत

छ) आदर्श प्ररूप कार्य-कारण संबंधों के और तुलनात्मक विश्लेषण में सहायक हैं। सही/ग़लत

14.3 आदर्श प्ररूप के उद्देश्य और उपयोग

आदर्श प्ररूप व्यावहारिक समस्याओं के विश्लेषण के लिए तैयार किए जाते हैं। बहुत से शोधकर्ताओं को इनका पूरा ज्ञान नहीं होता, जिनका उन्हें अपने अध्ययन में उपयोग करना है। इससे उनका शोध कार्य अस्पष्ट और अनिश्चित हो जाता है। वेबर का कहना है कि इतिहासवेत्ताओं के विवरण में जिस भाषा का प्रयोग होता है, उसमें सैकड़ों अस्पष्ट शब्द होते हैं। ये शब्द सही भाषा की तलाश की अचेतन आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए इस्तेमाल किए जाते हैं। सही अभिव्यक्ति क्या होगी, यह महसूस तो किया जाता है, लेकिन उस पर स्पष्ट रूप से विचार नहीं हो पाता (वेबर 1949: 92-93)।

समाज वैज्ञानिकों का दायित्व है कि वे विषय-वस्तु से अस्पष्टता दूर करके इसे बोधगम्य बनाएँ । उदाहरण के लिए, आइए हम सत्ता के आदर्श प्ररूपों की संरचना पर चर्चा करें। वेबर ने **सत्ता** के तीन प्रमुख प्रकार **तर्क-विधिक सत्ता,** पारंपरिक और **करिश्माई अथवा चमत्कारिक सत्ता** बताए हैं। इनमें से प्रत्येक तरह की सत्ता का पालन करने की प्रेरणा अथवा नेता की वैधता के दावे के आधार पर परिभाषित किया जाता है। यथार्थ में इन तीनों प्ररूपों का मिश्रण या मिला-जुला रूप पाया जाता है। इसीलिए सत्ता के प्ररूपों के बारे में हमारी समझ एकदम स्पष्ट होनी चाहिए। यथार्थ में ये सभी प्ररूप मिले-जुले रूप में होते हैं, इसलिए इन प्ररूपों को स्पष्ट रूप से परिभाषित किया जाना आवश्यक है।

आदर्श प्ररूप पूरी तरह अवधारणात्मक विचार से नहीं बनते। इन्हें वास्तविक समस्याओं के आनुभाविक अध्ययन से विकसित किया जाता है, संशोधित किया जाता है और अधिक स्पष्ट बनाया जाता है। इससे विश्लेषण की शुद्धता बढ़ जाती है।

इस प्रकार, यह कहा जा सकता है कि आदर्श प्ररूप आनुभाविक सस्याओं के विश्लेषण

की शोध पद्धति के साधन हैं। साथ ही इनसे प्रयोग की गई अवधारणा की अस्पष्टता और भ्रम दूर होते हैं तथा विश्लेषण की शुद्धता बढ़ती हैं।

सोचिए और करिए 1

आपको गाँवों में ग्राम पंचायत या शहरों में नगर निगम के कामकाज के तरीके की जानकारी होगी। अगर आपका निवास गाँव में है तो ग्राम पंचायत का आदर्श प्ररूप तैयार करिए। अगर शहर में है तो नगर निगम का आदर्श प्ररूप तैयार करिए। अगर संभव हो तो अध्ययन केंद्र में अपनी टिप्पणी की अन्य विद्यार्थियों के साथ तुलना कीजिए।

वेबर के विचार पद्धति संबंधी लेखों में आदर्श प्ररूप एक प्रमुख धारणा है और इसका इस्तेमाल ऐतिहासिक विन्यास अथवा विशिष्ट ऐतिहासिक समस्या को समझने के साधन के तौर पर किया गया है। इसके लिए उसने आदर्श प्ररूप तैयार किए और यह समझा कि घटनाएँ वास्तव में कैसे घटती हैं। साथ ही यह भी दिखाया कि अगर उसके पहले का कोई घटनाक्रम नहीं हुआ होता या दूसरे रूप में होता है, तो जिस घटना की व्याख्या का प्रयास किया जा रहा है, वह भी दूसरे तरीके से ही घटी होती। उदाहरण के तौर पर हमारे देश के गाँवों में भूमि सुधार लागू होने तथा आधुनिक शक्तियों जैसे शिक्षा, आधुनिक व्यवसाय आदि के प्रवेश ने संयुक्त परिवार व्यवस्था को क्षति पहुँचाई है। इसका अर्थ है कि किसी घटना (भूमि सुधार, शिक्षा आदि) और तात्कालिक स्थिति (संयुक्त परिवार) के बीच कार्य-कारण संबंध हैं। इस प्रकार, आदर्श प्ररूप की अवधारणा से किसी घटना की कार्य-कारण संबंध के आधार पर व्याख्या भी की जा सकती है।

इसका यह अर्थ नहीं हैं कि हर घटना के पीछे कोई विशिष्ट कारण ही हो। वेबर का यह मानना नहीं है कि समाज का एक तत्व किसी दूसरे तत्व द्वारा निर्धारित होता है। उसने इतिहास और समाजशास्त्र के कार्य-कारण संबंधों को मात्र आंशिक और संभावित ही माना है। इसका अर्थ है कि यथार्थ का एक अंश किसी दूसरे अंश को संभावित या असंभावित, अनुकूल या प्रतिकूल बना सकता है। उदारहण के लिए, कुछ मार्क्सवादियों का कहना होगा कि उत्पादन के साधनों के निजी स्वामित्व का परिणाम यही होगा कि इन साधनों के स्वामी, अल्पसंख्यक वर्ग के पास ही राजनीतिक सत्ता भी आ जाएगी। लेकिन वेबर की इस बारे में राय होगी कि संपूर्ण नियोजन की आर्थिक व्यवस्था में किसी खास राजनीतिक संगठन की संभावनाएं ज्यादा प्रबल हो जाती हैं। वेबर के लेखों में कार्य-कारण संबंधों का यह विश्लेषण विश्व भर के घटनाक्रम के तुलनात्मक अध्ययन अथवा घटनाओं की जांच परख तथा सामान्य सिद्धांत निर्धारित करने की उसकी दिलचस्पी से जुड़ा हुआ है। उसने किसी विशेष ऐतिहासिक घटना की अवधारणा प्रस्तुत करने और तुलनात्मक अध्ययन के लिए आदर्श प्ररूपों का प्रयोग किया। वेबर की आदर्श प्ररूप की अवधारणा में इतिहास और समाजशास्त्र की परस्पर निर्भरता सबसे ज़्यादा स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

इतिहास की विशिष्ट घटनाओं के विवेचन के अलावा, वेबर ने सामाजिक यथार्थ के अमूर्त तत्वों के विश्लेषण और विशेष तरह के सामाजिक व्यवहार की व्याख्या में आदर्श प्ररूपों का प्रयोग किया। अगले भाग (14.4) में इन पर विस्तृत अध्ययन किया गया है। 14.4 में वेबर की रचनाओं में दिए गए आदर्श प्ररूपों की भूमिका की चर्चा की जाएगी। परंतु अब समय है बोध प्रश्न 2 को हल करने का, क्यों न उसे ही पहले करें।

बोध प्रश्न 2

i) आदर्श प्ररूप कैसे बनाए जाते हैं? दो पंक्तियों में उत्तर दीजिए।

.....

.....

ii) आदर्श प्ररूप क्यों बनाए जाते हैं? तीन पंक्तियों में उत्तर दीजिए।

.....

.....

.....

14.4 वेबर द्वारा निर्धारित आदर्श प्ररूप

वेबर ने तीन विशिष्ट रूपों में आदर्श प्ररूपों का प्रयोग किया। ये तीन रूप अमूर्तीकरण के तीन स्तरों के आधार पर विभाजित किए गए हैं। पहले प्रकार के आदर्श प्ररूपों का आधार ऐतिहासिक विशिष्टताओं में होता है, जैसे पश्चिमी नगर, प्रोटेस्टेंट नैतिकता आदि। वास्तव में, ये आदर्श प्ररूप विशिष्ट ऐतिहासिक कालों और विशेष सांस्कृतिक क्षेत्रों में निर्दिष्ट होते हैं। दूसरी तरह के आदर्श रूप सामाजिक यथार्थ के अमूर्त तत्वों पर आधारित हैं, उदाहरण के लिए, नौकरशाही अथवा सामंतवाद की अवधारणाएं। सामाजिक यथार्थ के ये तत्व विभिन्न ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संदर्भों में पाए जाते हैं। तीसरे प्रकार के आदर्श प्ररूप व्यवहार-विशेष की पुनर्रचना से जुड़े हैं (कोज़र 1977: 224)। अब हमने इन प्रकारों का अलग-अलग अध्ययन किया है।

14.4.1 विशिष्ट ऐतिहासिक तत्वों के आदर्श प्ररूप

वेबर के अनुसार, आधुनिक पाश्चात्य समाज में पूँजीवाद पूरी तरह आ गया है। वेबर ने संपूर्ण ऐतिहासिक तत्वों में से खास विशेषताओं को लेकर पूँजीवाद का आदर्श प्ररूप निर्मित किया ताकि यह एक बोधगम्य स्वरूप ले सके। इस स्वरूप से यह बताया गया कि आधुनिक पूँजीवादी कार्यकलापों के आर्थिक विचार और **कल्विन धर्म** की प्रवृत्तियों में काफ़ी निकटता है। यह सिद्ध करने के लिए वेबर ने कल्विन धर्म के ऐसे पक्ष प्रस्तुत किए जो उसकी राय में पूँजीवादी प्रवृत्ति के विकास में विशेष महत्व के थे।

वेबर के अनुसार, **पूँजीवाद** का मूल रूप उस उद्यमी प्रवृति में निहित है, जिसका उद्देश्य अधिकाधिक लाभ पाना और अधिकाधिक संग्रह करना है। ये लक्ष्य कार्य और उत्पादन के तार्किक संगठन पर आधारित हैं। लाभ की इच्छा तथा तार्किक अनुशासन का मेल ही, ऐतिहासिक दृष्टि से पाश्चात्य पूँजीवाद की विशिष्टता का आधार है। लाभ की इच्छा सट्टेबाजी अथवा विजय या फिर साहस से संतुष्ट नहीं होती। यह तो अनुशासन और तार्किकता से ही संतुष्ट होती है। ऐसा आधुनिक राज्य या तर्कसंगत नौकरशाही के कानूनी प्रशासन के द्वारा ही संभव हो सकता है। इस प्रकार, पूँजीवाद को ऐसे उद्यम के रूप में परिभाषित किया जाता है, जो असीमित लाभ प्राप्त करने के लिए नौकरशाही तार्किकता के अनुरूप काम करता है।

वेबर ने यह दिखाने का प्रयास किया कि इस प्रकार की आर्थिक गतिविधि और कल्विन सिद्धांत के तत्वों के बीच काफ़ी समानता है। कल्विन धर्म की नैतिकता के अनुसार ईश्वर सर्वशक्तिमान और सामान्य जन से ऊपर है। मनुष्य को पृथ्वी पर ईश्वर के गौरव के लिए काम करना है और ऐसा तर्कसंगत तरीक़े से और लगातार तथा नियमित रूप से मेहनत

करके ही किया जा सकता है। व्यक्ति चाहे वह अमीर हो या ग़रीब उसका यह दायित्व है कि वह दैनिक जीवन में नैतिक आचार-विचार अपना कर ईश्वर के प्रति अपना कर्तव्य पूरा करे। ऐसे व्यक्ति के लिए परिश्रम ही पूजा है और आलसीपन की उसकी ज़िंदगी में कोई गुंजाइश नहीं है। जिसमें वैध आर्थिक गतिविधि से धन कमाना निहित है, कल्विन सिद्धांत का यह विशिष्ट तत्व पूंजीवादी प्रवृति के अनुरूप है। इसका आधार एक व्यवसाय में योग्य तरीक़े से काम करने के जीवन-मूल्य को कर्तव्य और सदाचार मानना है। कल्विन धर्म और पूँजीवाद के बीच यह घनिष्ठ संबंध और वेबर द्वारा परिभाषित पूँजीवाद आर्थिक व्यवस्था के उदय की यह स्थिति केवल पश्चिमी देशों में रही है। इसीलिए यह ऐतिहासिक दृष्टि से एक खास घटनाक्रम है। कल्विन नैतिकता में धार्मिक और आर्थिक गतिविधियों का एक संयोग है, जो न तो कैथोलिक धर्म में है, न ही हिंदू धर्म, इस्लाम, कन्फ्यूशियस धर्म, यहूदी तथा बौद्ध धर्मों में ऐसा संयोग पाया जाता है। वेबर ने इन सभी धर्मों का तुलनात्मक अध्ययन किया।

14.4.2 सामाजिक यथार्थ के अमूर्त तत्व

सामाजिक यथार्थ के ये तत्व अनेक ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संदर्भों में पाए जाते हैं। **नौकरशाही,** सत्ता के प्रकार और क्रिया के प्रकार इन अमूर्त तत्वों के प्रमुख उदाहरण हैं। आइए, अब हम इन तीनों उदाहरणों पर विचार करें।

(i) नौकरशाही

नौकरशाही शब्द का सामान्य अर्थ ऐसे विभागीय और प्रशासनिक अधिकारियों से है, जो कड़ी कार्यप्रणाली का पालन करते हैं। मैक्स वेबर ने औद्योगिक समाज में किसी संगठन के लक्ष्यों की विवेकपूर्ण तरीक़े से प्राप्ति के लिए नौकरशाही को अपरिहार्य माना (मिचेल 1967: 21)।

वेबर के अनुसार, नौकरशाही संगठनात्मक लक्ष्यों की प्राप्ति के तर्कसंगत अथवा कुशल प्रयासों के लिए सर्वोत्तम प्रशासनिक स्वरूप है। वेबर द्वारा निर्धारित नौकरशाही के आदर्श प्ररूप में अनेक तत्व शामिल हैं। जैसे

क) उच्च श्रेणी का विशिष्टीकरण और स्पष्ट रूप से निर्धारित श्रमविभाजन, जिसमें सरकारी कार्य के रूप में काम को बाँट दिया जाता है,

ख) सत्ता का पद क्रमानुसार ढाँचा, जिसमें निर्देश और दायित्व के क्षेत्रों का स्पष्ट निर्धारण हो,

ग) नियमों की औपचारिक संस्था, जिसमें संगठन का कामकाज चलाया जाए तथा प्रशासन लिखित प्रलेखों पर आधारित हो,

घ) संगठन के सदस्यों के परस्पर तथा इसकी सेवाएं लेने वालों के साथ निर्वैयक्तिक संबंध हों,

च) अधिकारियों की नियुक्ति योग्यता और तकनीकी ज्ञान के आधार पर हो,

छ) दीर्घ, अवधि की नौकरी हो तथा वरिष्ठता और योग्यता के आधार पर पदोन्नति हो,

ज) निश्चित वेतन और निजी तथा सरकारी आय के बीच स्पष्ट विभेद हो।

आधुनिक पूँजीवाद के उदय से पहले भी विश्व के अनेक भागों में विकसित नौकरशाही के उदाहरण मिलते हैं लेकिन पूँजीवाद के अंतर्गत पाई जाने वाली नौकरशाही ही आदर्श प्ररूप से अधिक मेल खाती है। वेबर ने नौकरशाही के इन अमूर्त तत्वों के आधार पर ही एक निश्चित व्यवस्था की व्याख्या की।

(ii) सत्ता के प्रकार

सत्ता के विभिन्न पक्षों को समझने के लिए मैक्स वेबर ने तीन प्रकार की सत्ता के अनुरूप ही इसके आदर्श प्ररूप बनाए। ये हैं, पारंपरिक, तर्क-विधिक और करिश्माई अथवा चमत्कारिक।

पारंपरिक सत्ता प्राचीन रीति-रिवाजों और नियमों की पवित्रता में विश्वास पर आधारित है। तर्क पर आधारित सत्ता कानूनों, आदेशों और प्रावधानों पर आधारित है। करिश्माई सत्ता का आधार नेता के व्यक्तित्व में निहित है या अनुयायियों द्वारा मान लिए गए असाधारण अथवा चमत्कारी गुण हैं। ऐसे व्यक्ति में लोगों को विश्वास होता है तथा वह उनकी श्रद्धा का पात्र बन जाता है। अवधारणा के इन आदर्श प्ररूपों का उपयोग वास्तविक राजनीतिक व्यवस्थाओं को समझने में किया जाता है। इनमें से ज़्यादातर व्यवस्थाओं में प्रत्येक प्ररूप के अंश होते हैं (विस्तृत अध्ययन के लिए इकाई 17 पढ़िए)।

(iii) कार्य के प्रकार

मैक्स वेबर के अनुसार समाजशास्त्र ऐसा विज्ञान है जिसमें सामाजिक कार्य को भली-भांति समझने का प्रयास इसलिए किया जाता है ताकि सामाजिक कार्य के कारण और प्रभावों की कार्य-कारण संबंधों के आधार पर व्याख्या की जा सके। यहाँ सामाजिक कार्य की निम्नलिखित प्रमुख विशेषताऐं दी जा रही हैं।

i) इसमें सभी प्रकार का मानवीय व्यवहार शामिल है।

ii) इसे मानवीय व्यवहार को व्यक्तिपरक अर्थ मिलता है।

iii) इसमें कार्य कर रहे व्यक्ति अथवा समूह परस्पर व्यवहार को ध्यान में रखते हैं।

iv) इसकी दिशा निश्चित होती है।

इस प्रकार सामाजिक कार्य का शुद्ध प्ररूप बनाना समाजशास्त्रियों के लिए एक आदर्श प्ररूप की तरह सहायक होता है जिसको स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है और जिसमें अस्पष्टता नहीं होती है (वेबर 1984: 128-128)। सामाजिक कार्य सामाजिक व्यवहार को दर्शाता है। इस अवधारणा का उपयोग समाज-मनोविज्ञानी और समाजशास्त्री दोनों करते हैं। अनेक समाजशास्त्रियों ने सामाजिक कार्य को सामाजिक विज्ञानों में प्रेक्षण की उचित इकाई माना। कोई कार्य सामाजिक तब कहा जाता है, जब इसे करने वाला ऐसे व्यवहार करे कि उसका कार्य एक या अधिक व्यक्तियों को प्रभावित करने के लिए हो। समाजशास्त्र में सर्वप्रथम मैक्स वेबर ने व्यापक रूप से सामाजिक कार्य की अवधारणा का उपयोग किया और इस बात पर ज़ोर दिया कि सामाजिक कार्य समाजशास्त्रीय सिद्धांत का आधार है (मिचेल 1968: 2)।

वेबर ने सामाजिक कार्य के चार प्रकार बताए हैं। ये हैं - लक्ष्यों के संदर्भ में कार्य, मूल्यों के संदर्भ में कार्य, पारंपरिक कार्य और **भावात्मक कार्य**। इनका वर्गीकरण इसके स्वरूप अथवा दिशा के अनुसार होता है। लक्ष्यों के संदर्भ में तार्किक कार्य का वर्गीकरण उन दशाओं अथवा साधनों के द्वारा किया जाता है जिनका प्रयोग व्यक्ति अपने तार्किक रूप से चुने हुए लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए करता है। मूल्यों के संदर्भ में कार्य का वर्गीकरण किसी निरपेक्ष मूल्य के प्रति तार्किक दृष्टि के आधार पर किया जाता है, जैसे कर्त्तव्य सम्मान या किसी उद्देश्य के प्रति निष्ठा के चरम आदर्श के लिए किया गया कार्य। पारंपरिक कार्य के प्ररूप का वर्गीकरण लम्बे समय से चले व्यवहार, रीति-रिवाज और आदतों के अनुरूप किए गए कार्य से होता है। प्रभाव पर आधारित कार्य का वर्गीकरण

भावात्मक प्रभाव से निश्चित होने वाली दिशा के अनुसार किया जाता है। इसके निर्धारण में कार्य करने वाले पर पड़े विशिष्ट प्रभाव और भावात्मक स्थिति को ध्यान में रखा जाता है। वास्तविकता में इन चारों प्रकार की सामाजिक कार्य का मिला जुला रूप ही पाया जाता है, लेकिन विश्लेषण और समझने के लिए इन्हें शुद्ध या आदर्श प्ररूपों में विभाजित कर लिया जाता है। उदाहरण के लिए, तार्किक कार्य के आदर्श प्ररूप से असंगत विचलन को आंका जा सकता है तथा यह समझा जा सकता है कि वह कार्य चारा प्रकारों में से किससे अधिक मेल खाता है। आइए, अब सोचिये और करिए 2 को पूरा करें।

सोचिए और करिए 2

रोज़मर्रा की जिंदगी से मैक्स वेबर द्वारा निर्धारित कार्य के इन चार प्रकारों में से प्रत्येक के दो-दो उदाहरण दीजिए। यदि संभव हो तो इनकी तुलना अपने अध्ययन केंद्रों में अन्य विद्यार्थियों द्वारा दिए गए उदाहरणों से कीजिए।

14.4.3 व्यवहार विशेष की पुनर्रचना

इस प्ररूप में ऐसे तत्व शामिल हैं जिनके आधार पर किसी व्यवहार-विशेष की तार्किक पुनर्रचना होती है। उदाहरण के लिए, वेबर के अनुसार आर्थिक सिद्धांत की सभी मान्यताएं किसी विशेष परिस्थिति में लोगों के संभावित व्यवहार के आदर्श प्ररूपों की संरचनाएँ ही हैं, जैसे कि जब लोग पूरी तरह आर्थिक आधार पर ही व्यवहार करें। इसमें आवश्यकता व पूर्ति के क़ानून, वस्तुओं की उपयोगिता की सीमा आदि शामिल हैं। बाज़ार में वस्तुओं की पूर्ति ही आवश्यकता के अनुसार उनकी क़ीमत नियंत्रित करती है। इसी तरह उपभोग के लिए वस्तुओं की उपयोगिता अधिक है या कम, इस पर निर्भर होती है कि बाजार में उपभोग के लिए वे कितनी मात्रा में उपलब्ध हैं। आर्थिक सिद्धांत अपने मूल रूप में आर्थिक व्यवहार के अनुरूप चलते हैं। यह मूल रूप निश्चित तरीक़े से परिभाषित किया जाता है (वेबर 1967: 210)।

समय हो गया है कि अब बोध प्रश्न 3 पूरा किया जाए।

बोध प्रश्न 3

i) वेबर ने कल्विन धर्म की नैतिकता और पूँजीवादी प्रवृति के बीच संबंध बताने के लिए आदर्श प्ररूप की धारणा का किस तरह उपयोग किया? तीन पंक्तियों में उत्तर दीजिए।

.....

.....

.....

ii) मैक्स वेबर द्वारा निर्धारित नौकरशाही के आदर्श प्ररूप की मुख्य विशेषताएं क्या हैं? पांच पंक्तियों में उत्तर दीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

iii) मैक्स वेबर ने सामाजिक कार्य के कौन-कौन से चार आदर्श प्ररूप बताए हैं? लगभग आठ पंक्तियों में उत्तर दीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

14.5 सारांश

इस इकाई के प्रारंभ में 'आदर्श' और 'प्ररूप' शब्दों का सामान्य अर्थ बताया गया। फिर हमने मैक्स वेबर के सिद्धांतों के अनुसार आदर्श प्ररूप की अवधारणा और विशेषताओं की चर्चा की। आदर्श प्ररूप ऐसी संरचनाएं अथवा अवधारणाएं हैं, जो सामाजिक यथार्थ के स्पष्टीकरण और व्याख्या के लिए बनाई जाती हैं। वेबर ने आदर्श प्ररूपों का तीन विशिष्ट रूपों में प्रयोग किया। पहले, उसने विशिष्ट ऐतिहासिक तत्वों के आदर्श प्ररूपों का प्रयोग प्रोटेस्टेंट नैतिकता की व्याख्या करने के लिए किया, जो एक विशिष्ट ऐतिहासिक काल और सांस्कृतिक क्षेत्र में विकसित हुआ। दूसरे, उसने सामाजिक यथार्थ के अमूर्त तत्वों जैसे नौकरशाही, सत्ता के प्रकार, सामाजिक कार्य के प्रकार आदि की व्याख्या में आदर्श प्ररूपों का उपयोग किया। तीसरे, वेबर ने व्यवहार-विशेष की पुनर्रचना के लिए भी आदर्श प्ररूप का प्रयोग किया। हमने इस इकाई में वेबर द्वारा निर्धारित आदर्श प्रारूपों का विस्तृत अध्ययन किया।

14.6 शब्दावली

भावात्मक कार्य (affective action) ऐसी क्रिया जो किसी भावनात्मक स्थिति के प्रभाव में की जाए

सत्ता (authority) ऐसी शक्ति जिसे लोग वैध मानते हों

नौकरशाही (bureaucracy) प्रशासन की ऐसी प्रणाली जो श्रम विभाजन, कर्मचारियों के पद-क्रम, कामकाज चलाने के नियमों की औपचारिक संस्था, लिखित प्रलेखों, निर्वैयक्तिक संबंधों, योग्यता के आधार पर नियुक्ति तथा निजी और सरकारी आय के विभेद पर आधारित हो

कल्विन धर्म (calvinism) ईसाई धर्म के प्रोटेस्टेंट धर्म की चार मुख्य धाराएं हैं - मैथाडिज़्म, पाइटिज़्म, बैप्टिज़्म और कल्विनिज़्म। कल्विन धर्म के तीन मुख्य आधारभूत सिद्धांत हैं - ब्रहमांड ईश्वर के महान गौरव के प्रसार के लिए बनाया गया है, सर्वशक्तिमान ईश्वर की लीला के उद्देश्य मानवीय समझ से परे हैं, तथा बहुत थोड़े से लोग ईश्वर की शाश्वत कृपा के लिए चुने जाते हैं; अर्थात् पूर्वानियति में विश्वास।

पूंजीवाद	ऐसा आर्थिक संगठन जिसमें सम्पत्ति का निजी स्वामित्व, पूंजी पर निजी नियंत्रण, बाज़ार प्रणाली और श्रमिकों की व्यवस्था हो तथा जिसका लक्ष्य अधिक से अधिक लाभ कमाना हो
करिश्माई अथवा चमत्कारिक सत्ता (charismatic authority)	ऐसी सत्ता में नेता के आदेश इसलिए माने जाते हैं, क्योंकि अनुयायियों को नेता के असाधारण गुणों में विश्वास होता है।
तर्क-विधिक सत्ता (legal rational authority)	इस प्रकार की सत्ता में नियमित और सार्वजनिक प्रक्रिया से बने नियमों का पालन किया जाता है।
प्रोटेस्टेंट नैतिकता	ईसाई धर्म का एक सिद्धांत, जिससे पूंजीवाद के सांस्कृतिक स्वरूप का प्रमुख अंश बना है जैसे - व्यक्तिवाद, उपलब्धियों के लिए प्रेरणा, विरासत में मिली संपत्ति और विलासिता का विरोध, काम तथा मुनाफे पर जोर, जादू-टोने तथा अंधविश्वास का विरोध एवं तर्कसंगत संगठन के लिए प्रतिबद्धता।

14.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

आरों, रेंमों, 1967. *मेन करेंट्स इन सोशियोलॉजिकल थॉट्स.* वाल्यूम 2, पेंगुइन बुक्सः लंदन, पृष्ठ 193-210

बेन्डिक्स, आर., 1960. *मैक्स वेबरः इन इंटलैक्चुअल पोट्रेट.* ऐन्करः न्यूयार्क

टर्नर, स्टीफ़न (सम्पादन) 2000. *द केम्ब्रिज कंपेनियन टु वेबर.* केम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेसः केम्ब्रिज

14.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

(i) ग)

(ii) क) ग़लत
ख) सही
ग) सही
घ) ग़लत
च) ग़लत
छ) सही

बोध प्रश्न 2

(i) आदर्श प्ररूप विचाराधीन वस्तु या घटना के अनिवार्य तथा विशिष्ट समझे जाने वाले तत्वों अथवा विशेषताओं के चयन से बनाए जाते हैं।

(ii) आदर्श प्ररूप किसी विशिष्ट सामाजिक प्रवृति या समस्या को समझने और विश्लेषित करने के लिए उपयोग में लाए जाते हैं, दूसरे ये प्रयुक्त धारणाओं में अस्पष्टता और भ्रम की स्थिति भी दूर करते हैं, तीसरे, इनके उपयोग से विश्लेषण ज्यादा स्पष्ट और शुद्ध होता है।

बोध प्रश्न 3

(i) वेबर ने पूंजीवाद का आदर्श प्ररूप निर्मित किया और प्रोटेस्टेंट नैतिकता के ऐसे पक्षों का पता लगाया, उसकी राय में जिनका पूंजीवाद प्रवृत्ति के बनने में महत्वपूर्ण योगदान रहा और जो आधुनिक पाश्चात्य पूंजीवाद के उदय के कारण बने।

(ii) वेबर के अनुसार नौकरशाही के आदर्श प्ररूप की विशेषताएं हैं - श्रम विभाजन तथा विशेषज्ञता, सरकारी कार्य के रूप में काम का वितरण, अधिकारियों का पदक्रम जिसमें निर्देश और दायित्व के क्षेत्रों का स्पष्ट निर्धारण हो, कामकाज के नियमों की औपचारिक संस्था लिखित प्रलेख, निर्वैयक्तिक संबंध, योग्यता के आधार पर नियुक्ति, निजी तथा सरकारी आय में विभेद, पदोन्नति और निश्चित वेतन।

(iii) मैक्स वेबर ने सामाजिक कार्य के निम्नलिखित चार प्रकार बताए हैं।

क) **लक्ष्य के संदर्भ में तार्किक कार्य:** उदाहरण के लिए, ज़िला कलेक्टर द्वारा आगामी चुनावों की व्यवस्था करना

ख) **मूल्यों के संदर्भ में तार्किक कार्य:** उदाहरण के लिए, सैनिक द्वारा देश के लिए अपना जीवन खतरे में डालना

ग) **भावात्मक कार्य:** जैसे क्रिकेट मैच में अम्पायर द्वारा बल्लेबाज़ को आउट न मानने पर गेंदबाज का अम्पायर से अभद्र व्यवहार करना

घ) **पारंपरिक कार्य:** जैसे शमशान से लौटने के बाद व्यक्ति का स्नान करना